संचार माध्यमों से कृषि उन्नति

रेनू सनवाल, प्रतिभा जोशी, रेनू जेठी, टी.बी. पाल और **जे.के. बिष्ट**
विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

" मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं शैक्षिक विकास के साथ ही कृषि के सर्वांगीण विकास में संचार की अहम भूमिका है। कृषि क्षेत्र में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के माध्यम से कृषि एवं ग्रामीण विकास में उतरोत्तर वृद्धि हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग मोबाइल फोन, रेडियो और टेलीविजन के रूप में पारंपरिक मीडिया द्वारा किया जाता है। पर्वतीय क्षेत्रों की भौगोलिक परिस्थितियों, प्रसार तंत्र व तकनीकी ज्ञान के अभाव को संस्तुत तकनीकों के माध्यम से दूर किया जा सकता है, जिसमें सूचना एवं तकनीकी प्रौद्योगिकी काफी महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। पर्वतीय कृषि प्रणाली की उत्पादकता एवं दक्षता बढ़ाने में आईसीटी का महत्वपूर्ण योगदान है। पर्वतीय क्षेत्रों में किसान अत्यंत जोखिम भरी दशाओं एवं अनिश्चितताओं में खेती करते हैं, क्योंकि यहां खेत छोटे और बंटे हुए होते हैं। अनियमित वर्षा, जंगली जानवरों द्वारा फसलों का नुकसान, अपर्याप्त विपणन ढांचा, अल्प निवेश, अपर्याप्त सिंचाई सुविधाएं, समय पर सही जानकारी न मिलना तथा अविकसित प्रसार तंत्र जैसी बाधाएं पर्वतीय कृषि को अत्यंत कठिन बनाती हैं। "

आज के सूचना युग में दूरभाष, रेडियो, दूरदर्शन, कम्प्यूटर, समाचारपत्र व पत्र-पत्रिकाओं की उपलब्धता दूरदराज के क्षेत्रों तक हो चुकी है। अत: इन माध्यमों के कुशल उपयोग से कृषि आधारित ग्रामीण जनता की सोच में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है और पर्वतीय कृषि प्रणाली की उत्पादकता एवं दक्षता को बढ़ाया जा सकता है।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी में विवेकानन्द संस्थान का योगदान

पर्वतीय क्षेत्रों में संचार सेवा का प्रयोग स्तर बहुत कम है। इसका मूल कारण ग्रामीणों में नवीन तकनीकों एवं संचार के साधनों के विषय में जागरूकता का अभाव है। रेडियो एक पारंपरिक मीडिया है, जिसके द्वारा पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि प्रचार व प्रसार का कार्य सरल हो जाता है। यह संचार का साधन कृषि संबंधी सूचना के प्रसार में काफी तीव्र होने के साथ ही सूचना को अधिक लोगों तक पहुंचाने में सक्षम है। इसी परिप्रेक्ष्य में आकाशवाणी, अल्मोड़ा संस्थान प्रत्येक सप्ताह एक कार्यक्रम *कृषि समृद्धि* प्रसारित करता है। इस कार्यक्रम के माध्यम से पर्वतीय कृषकों को कृषि संबंधित समस्याओं पर सुझाव व निदान एवं नवीन कृषि तकनीकों की जानकारियां दी जाती हैं। इसके अतिरिक्त पर्वतीय कृषि संबंधित सेवाओं को कृषकों तक दूरभाष द्वारा पहुंचाने हेतु विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा नि:शुल्क 'कृषक हैल्प-लाइन' सेवा का आरंभ किया गया।

कृषि समृद्धि रेडियो कार्यक्रम

संचार तकनीकों में रेडियो के महत्व को देखते हुए आकाशवाणी, अल्मोड़ा द्वारा प्रसारित एवं विवेकानन्द संस्थान द्वारा संचालित *कृषि समृद्धि कार्यक्रम* जुलाई 2009 में आरंभ किया गया। इस सेवा द्वारा किसानों को सरल एवं सरस भाषा में कृषि एवं संबंधित समस्याओं का समाधान उपलब्ध कराने के साथ ही कृषक समुदाय को वैज्ञानिक विधि से खेती करने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है।

आकाशवाणी, अल्मोड़ा के स्टूडियो में कृषि समृद्धि कार्यक्रम का संचालन

कृषि समृद्धि कार्यक्रम द्वारा किसानों को संरक्षित खेती, पौध रोपण, सब्जियों की खेती, विभिन्न फसलों में कीट-रोग-बीमारियों के लक्षण एवं उपचार पद्धति, पॉलीहाउस निर्माण तकनीक, सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली, फसल संबंधित नवीन किस्मों व बीज उपलब्धता की जानकारी, मानव संसाधन विकास, फसलोत्तर तकनीक, नवीनतम तकनीकी जानकारी, कृषि निवेश हेतु बैंकों की भूमिका, स्वयं सहायता समूह गठन, स्वास्थ्य और पोषण से संबंधित जानकारी एवं महिला सशक्तिकरण आदि के विषय में बताया जाता है। कार्यक्रम का प्रसारण आकाशवाणी, अल्मोड़ा से प्रत्येक रविवार सायं 6:00 से 6:15 बजे तक किया जाता है।

कृषि समृद्धि कार्यक्रम का विश्लेषण

विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा संचालित *कृषि समृद्धि कार्यक्रम* जुलाई, 2009 को आकाशवाणी अल्मोड़ा द्वारा सर्वप्रथम प्रसारित किया गया। कृषकों को प्रदान की गयी सूचना के आधार पर वर्ष 2009 से जून 2013 तक संस्थान द्वारा संचालित *कृषि समृद्धि कार्यक्रम* पर प्रसारित कार्यक्रमों को संकलित किया गया। जून 2013 तक इस कार्यक्रम के माध्यम से 200 से अधिक कृषि संबंधित विषयों पर जानकारियां प्रदान की गयीं। इनमें अधिकतर जानकारियां फसल प्रजाति, फसल चक्र, फसल सुरक्षा एवं प्रबंधन, फसल उत्पादन तकनीक, जल संरक्षण, संरक्षित खेती, चारा उत्पादन व प्रबंधन आदि वियों पर प्रदान की गयीं। इसके अतिरिक्त मशरूम उत्पादन, किसान मेला व प्रक्षेत्र दिवस, कृषि में महिलाओं का योगदान, फसल प्रसंस्करण एवं खाद्य परिरक्षण, कृषि में निवेश हेतु बैंकों का योगदान, किसान क्रेडिट कार्ड, स्वयं सहायता समूह गठन, तकनीकी हस्तांतरण आदि पर भी वार्ता प्रसारित की गयी। सबसे अधिक जानकारी फसल सुरक्षा एवं प्रबंधन (18 प्रतिशत) विषय पर रही। उसके बाद उन्नत किस्मों (13 प्रतिशत) व कृषि सूचना एवं प्रसार (10.5 प्रतिशत) पर प्रदान की गयी।

कृषक-हैल्पलाइन सेवा का विश्लेषण

कृषकों की मुख्य समस्याओं को जानने एवं उनके निराकरण हेतु वर्ष 2005 से 2011 तक *कृषक हैल्प लाइन* द्वारा पूछे गये प्रश्नों को संकलित किया गया। यह पाया गया कि अधिकतर प्रश्न उत्तराखण्ड के विभिन्न जिलों से एवं कुछ प्रश्न जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, उत्तर प्रदेश एवं गुजरात राज्य के कृषकों द्वारा पूछे गये। इनमें से अधिकतर प्रश्न बीज उपलब्धता, फसल सुरक्षा एवं प्रबंधन, उन्नत प्रजाति के बीज, रासायनिक उर्वरकों की मात्रा, फसल चक्र, संरक्षित कृषि एवं कृषि यंत्र पर आधारित थे। इसके अलावा कुछ प्रश्न मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, किसान मेला एवं जल संरक्षण पर भी पूछे गये।

खरीफ एवं रबी मौसम के अनुसार पूछे गये प्रश्नों का विश्लेषण किया गया। विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि खरीफ अवधि के दौरान फसल सुरक्षा एवं फसल प्रबंधन विषय में ज्यादा प्रश्न पूछे गये। यह भी देखा गया कि हर वर्ष प्रश्नों की संख्या में वृद्धि हो रही है। पूछे गये प्रश्नों के रुझान से स्पष्ट है कि उत्तराखण्ड के अतिरिक्त अन्य राज्यों के कृषक भी इस कार्यक्रम में अपनी रुचि दिखा रहे हैं। फलस्वरूप प्रश्नकर्ताओं एवं प्रश्नों की संख्या में साल दर साल वृद्धि हो रही है।

उद्देश्य

- कृषि विषय पर शोध द्वारा प्राप्त परिणामों की जानकारी देना
- कृषकों की कृषि संबंधित समस्याओं पर सुझाव व निदान
- नवीन कृषि तकनीकों का प्रचार एवं प्रसार
- राज्य कृषि प्रसार प्रणाली को उत्प्रेरित करना
- कृषि योजनाओं की जानकारी प्रदान करना
- पर्वतीय क्षेत्रों हेतु सूचना संचार का एक सशक्त माध्यम

कृषक हैल्पलाइन सेवा-कृषि संचार हेतु महत्वपूर्ण माध्यम

पर्वतीय कृषि संबंधित सेवाओं को कृषकों तक पहुंचाने हेतु विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा वर्ष, 2001 से नि:शुल्क 'कृषक हैल्प-लाइन' सेवा का आरंभ किया गया। उक्त सुविधा का लाभ विवेकानन्द संस्थान के नि:शुल्क दूरभाष संख्या 18001802311 पर लिया जा सकता है। इस सेवा के अंतर्गत कृषि संबंधित समस्या या प्रश्न किसी भी सरकारी कार्य दिवस पर प्रात: 10 बजे से सांय 05 बजे तक पूछे जा सकते हैं, जिसका उत्तर कृषक को संस्थान के विशेषज्ञों/वैज्ञानिकों द्वारा उसी समय दे दिया जाता है।

इन सेवाओं के तहत निम्नलिखित प्रमुख विषयों में जानकारी उपलब्ध करायी जाती है:

- अधिक उपज प्रदान करने वाली फसलें-धान, गेहूं, मक्का, सावां/मादिरा, मंडुआ उगल, चुवा, दलहनी मटर, गहत (कुल्थी), मसूर, सोयाबीन, राजमा, सब्जी फसलें, जैसे-सब्जी मटर, फ्रांसबीन, भिण्डी, टमाटर, प्याज आदि
- अधिक उत्पादन के लिए सिंचित व असिंचित क्षेत्रों में खेती की तैयारी, बुआई का समय व विधि, बीजोपचार, संतुलित खाद व उर्वरक, बुआई व रोपाई विधि, निराई-गुड़ाई, सिंचाई, खरपतवार नियंत्रण, कटाई, मड़ाई व बीज संरक्षण की जानकारी
- कम लागत की जल संग्रहण प्रौद्योगिकी, जैसे स्थानीय सामग्री का उपयोग कर निम्न घनत्व वाली पॉलीथीन (एलडीपीई) फिल्म की परत वाले जल भंडारण टैंक (पॉलीटैंक) निर्माण
- अधिक उत्पादकता के लिए उन्नत फसल प्रणालियां
- विभिन्न फसलों में कीट, रोग व बीमारियों के लक्षण एवं उपचार पद्धति
- संरक्षित खेती प्रौद्योगिकी एवं अधिक मूल्य वाली बेमौसमी सब्जियों की पॉलीहाउस में उत्पादन तकनीक
- मृदा परीक्षण, मृदा कटाव को रोकना, जलागम विकास, मशरूम, मधुमक्खी पालन आदि
- कृषकों हेतु महत्वपूर्ण व्यवहारिक सूचनाएं, जैसे-कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम, प्रदर्शन, कृषक भागीदारी, किसान मेला, प्रक्षेत्र दिवस, कृषि साहित्य व कृषि में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग
- चारा उत्पादन एवं परती जमीन का उपयोग
- कृषि कार्यों को सफल बनाने हेतु विकसित यंत्रों के विषय में जानकारी

उपरोक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त भी विवेकानन्द संस्थान निम्नलिखित सूचना एवं संचार माध्यम से पर्वतीय कृषि की उन्नति की दिशा में लगातार प्रयासरत रहते हुए पर्वतीय कृषकों के आर्थिक, सामाजिक एवं महिला कृषकों के स्वास्थ्य के स्तर को सुधारने हेतु कार्यरत है।

पत्राचार माध्यम: कृषि समृद्धि कार्यक्रम, केन्द्र निदेशक, आकाशवाणी, अल्मोड़ा-263601 (उत्तराखण्ड)

ई-मेल: vpkas@nic.in

वेबसाइट: http//vpkas.nic.in

नि:शुल्क दूरभाष: 1800-180-2311